शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 3, pp (209-216), Month: Sep. 2018

नरेंद्र मोदी सरकार की विदेश नीति पर कौटिल्य के मंडल सिद्धांत का प्रभाव

डॉ० भूपेन्द्र प्रताप सिंह
राजनीति विज्ञान विभाग
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ

साराशं

कौटिल्य का अर्थशास्त्र सामरिक प्रबंधन का एक शास्त्रीय ग्रन्थ है और इसे आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए आधारभूत पाठ माना जा सकता है। पश्चिमी समाजवादी मैक्स वेबर अर्थशास्त्र के महत्व और वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता को पहचानने और समझने वाले पहले लोगों में से थे, जब उन्होंने हिंदू धर्म (धर्म के व्यवसाय और समाजशास्त्र के रूप में राजनीति) पर धार्मिक अध्ययन किया। मोदी के विश्वदृष्टि में, अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक साहसी, भारत का स्थान पहले से कहीं अधिक बड़ा है। इसके अनुरूप, प्रधान मंत्री की विदेश नीति ज्ञान और लोगों के बड़े कारण से सूचित शक्ति के व्यावहारिक और बुद्धिमान उपयोग पर अर्थशास्त्र के जोर को दर्शाती है। क्या यह अब तक सफल रहा है

मुख्य बिन्दु

नरेन्द्र मोदी, विदेश नीति, अर्थशास्त्र

प्रस्तावना

नरेन्द्र मोदी सरकार की विदेश नीति को मोदी सिद्धान्त भी कहते हैं। 26 मई, 2014 को सत्ता में आने के तुरन्त बाद से ही मोदी सरकार ने अन्य देशों के साथ सम्बन्धों को नया आयाम देने की दिशा में कार्य करना आरम्भ कर दिया।

श्रीमती सुशमा स्वराज भारत की विदेश मंत्री थी। दक्षिण एशिया के अपने पड़ोसियों से सम्बन्ध सुधारना मोदी की विदेश नीति के केन्द्र में है। इसके लिए उन्होने 100 दिन के अन्दर ही भूटान, नेपाल, जापान की यात्रा की। इसके बाद अमेरिका, म्यांमार, आस्ट्रेलिया और फिजी की यात्रा की।

श्रीमती सुशमा स्वराज ने भी बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, म्यांमार, सिंगापुर, वियतनाम, बहरीन, अफगानिस्तान, तजाकिस्तान, यूएसए, यूके, मॉरीसस, मालदीव, यूएईदक्षिण कोरिया, चीन, ओमान, और श्रीलंका की यात्रा की है।

अब माना जाने लगा है कि नरेन्द्र मोदी ने विश्व के बारे में भारत की सोच में आमूल परिवर्तन कर दिया है।

न केवल पश्चिमी विद्वान, बल्कि आधुनिक शिक्षा पर पोशित भारतीय विशेशज्ञ भी, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति का मूल्यांकन करने के लिए 2,300 साल पहले लिखे गए अर्थशास्त्र का उपयोग करने से कतरा सकते हैं। हालांकि, उन्हें अपनी धारणा पर पुनर्विचार करना चाहिए।

अर्थशास्त्र के लेखक और सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु कौटिल्य के अध्ययन में रुचि और उनकी समकालीन प्रासंगिकता की सराहना, मोदी सरकार से पहले की है। पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) और विदेश सचिव शिवशंकर मेनन के समर्थन से 2012 के बाद से एक प्रमुख भारतीय थिंक टैंक इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस (आईडीएसए) द्वारा गंभीर अध्ययन किए गए हैं। यह विशेष परियोजना भारतीय और पश्चिमी विद्वानों द्वारा पिछले कई वर्षों के काम पर बनाई गई है। हाल ही में, हेनरी किसिंजर ने अर्थशास्त्र को शासकों के लिए एक व्यावहारिक. गाइड टू एक्शन के रूप में चित्रित किया है, जिसने इसके मौलिक महत्व को रेखांकित किया है।

अर्थशास्त्र राज्य के सभी पहलुओं पर एक कालातीत और व्यापक ग्रंथ हैरू राजनीति, कानून, अर्थव्यवस्था, युद्ध और शांति का प्रबंधन, खुफिया, विदेश नीति और कूटनीति। यह एक राज्य के मूल उद्देश्य की व्याख्या करता है, अर्थात्, अपने लोगों के कल्याण और सुरक्षा को सुनिश्चित करना।

जटिल सुरक्षा–विकास मैट्रिक्स वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की एक अभिन्न विशेषता है। सुरक्षा (व्यापक अर्थ में) और विकास दोनों आवश्यक हैं। वे स्वाभाविक रूप से वैश्वीकृत समाज में जुड़े हुए हैं जिसमें लोग रहते हैं – परमाणु शस्त्रागार और सुरक्षा के लिए कई पारंपरिक और गैर–पारंपरिक खतरों की छाया में। पूर्व एनएसए शिवशंकर मेनन ने देखा है कि कई मायनों में आज हम जिस दुनिया का सामना कर रहे हैं कृ वह उस दुनिया के समान है जिसे कौटिल्य ने महानता के लिए मौर्य साम्राज्य का निर्माण करते समय संचालित किया था।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता के लिए इस विश्लेषण को सख्ती से प्रतिबंधित करते हुए, कोई भी इस बात पर प्रकाश डाल सकता है कि ग्रंथ की सर्वोत्कृष्टता सप्तांग के अपने तीन सिद्धांतों में परिलक्षित होती है (जो राजकोश, प्रधान मंत्री और सेना सहित सात अंगों के रूप में राज्य की शक्ति को देखता है); राजा मंडला (राज्यों का चक्र, जहां किसी का अपना देश मित्रवत और अमित्र पड़ोसियों से घिरा हुआ है); और शडगुण (छह तरीके से एक राज्य विदेश नीति का संचालन कर सकता है)।

कौटिल्य ने पड़ोसी, मध्यवर्ती और दूर के राज्यों की विभिन्न श्रेणियों के साथ राज्य की निरंतर बातचीत के बारे में (एक विद्वान, संरक्षक और सम्राट के मंत्री के रूप में) जो लिखा और अभ्यास किया, वह अत्यधिक प्रासंगिक है। उनकी शिक्षाएं भारत के बौद्धिक डीएनए का हिस्सा हैं। आईडीएसए परियोजना में भाग लेने वाले रणनीतिक मामलों के विद्वान माइकल लिबिग कहते हैं कि कौटिल्य भारत की रणनीतिक संस्कृति को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।

चार्य चाणक्य की छः सूत्रीय विदेश नीति और मोदी सरकार

"अपनी नीति तो अपनाओ, लेकिन शत्रु की युद्ध नीति को समझना भी उतना ही आवश्यक है। युद्ध में अपने शत्रु की भान्ति सोचना भी आवश्यक है। जो भी नीति हो, उसे गुप्त रखो। उसे केवल अपने कुछ विश्वासपात्र सहयोगियों को बताओ। अच्छे के लिए सोचो, पर बुरे से बुरे के लिए भी उद्यत रहो।" दृ यह कथन है महामती चाणक्य का। जिसके आदर्श व्यावहारिक, राजनीतिक, कूटनीतिक चिन्तन का यह विश्व लोहा मानता है और जिसके विषय में निस्सन्देह यह कहा जा सकता है कि उसके कालजयी राजनीतिक व कूटनीतिक सूत्र हमारा आज भी मार्गदर्शन कर रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे।

यह बहुत ही दुरूखद है कि चाणक्य जैसा महान कूटनीतिज्ञ जिस भारत देश में हुआ उसी देश में उसके विचारों की उपेक्षा की जाती है, जबकि विदेशों में उसे कहीं अधिक सम्मान दिया जाता है। चाणक्य ने राजनीति के ऐसे सिद्धांतों का प्रतिपादन किया था जो कालजयी हैं। ये सिद्धांत उतने ही मननीय, विचारणीय और ग्रहणीय आज भी हैं जितने उसके जीवन–काल में थे। हमारा मानना है कि जब तक सृष्टि रहेगी तब तक भारत के महान तपस्वी और राजनीतिक मनीशी महामति चाणक्य के ये विचार मानवता की सेवा करते हुए राजनीति का मार्गदर्शन करते रहेंगे ।

महामती चाणक्य ने हमें परामर्श दिया है कि शत्रु को जहाँ से भी आर्थिक, सामाजिक, मानसिक एवं शारीरिक शक्ति प्राप्त हो रही है, उस स्रोत को शत्रु तक पहुँचने से पहले ही मिटा दो। सही समय की प्रतीक्षा करो। जब शत्रु पूर्णरूपेण दुर्बल हो तब उस पर (उसके शत्रु, जो कि अब आपका मित्र है) मिलकर आक्रमण कर दो। इस प्रकार के हमले के उपरान्त शत्रु पूर्णतः अचम्भित हो जाएगा और आपसे प्रतिशोध लेने में भी सक्षम नहीं होगा।

चाणक्य अथवा कौटिल्य ने विदेश नीति सम्बन्धी छः प्रकार की नीतियों का उल्लेख किया है

सन्धिः विदेश नीति में संधि शब्द का बहुत अधिक महत्व है। चाणक्य के कथनानुसार शान्ति बनाए रखने हेतु समतुल्य या अधिक शक्तिशाली राजा के साथ संधि की जा सकती है। आत्मरक्षा की दृष्टि से शत्रु से भी सन्धि की जा सकती है। किन्तु इसका लक्ष्य शत्रु को कालान्तर में निर्बल बनाना है। भारतीय राजनीतिक चिन्तन और परम्परा में शत्रु वह है जो हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व को समाप्त करने के शड़यन्त्रों में या किसी भी प्रकार से मानवीय मूल्यों का हनन करने और मानवता का विनाश करने की योजनाओं में संलिप्त रहता है। चाणक्य का मत है कि संधि समतुल्य या शक्तिशाली राजा के साथ ही की जाती है।

यदि शत्रु शक्तिशाली है तो उससे संधि कर लेने में ही लाभ है। यद्यपि चाणक्य के इस कथन का अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि शक्तिशाली शत्रु के सामने आप आत्महीनतावश सदा पूँछ हिलाते रहें। सन्धि करने से उसका अभिप्राय केवल इतना है कि देश, काल व परिस्थिति के अनुसार यदि कुछ समय के लिए शक्तिशाली राजा को या देश को इस भ्रम में डाला जा सकता है कि हम उससे सन्धि करना ही अपने लिए लाभकारी मानते हैं तो ऐसा कर लिया जाना चाहिए।

समय आने पर अपनी शक्ति को बढ़ाना चाहिए और फिर उसकी दानवता का प्रतिकार करना चाहिए।

विग्रह या शत्रु के विरुद्ध युद्ध का निर्माण

जब कोई शत्रु देश हमारे आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने लगता है और हमारी आन्तरिक शान्ति को भंग करने का प्रयास करने लगता है, तब उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा करना अनिवार्य हो जाता है। यह तब और भी अधिक आवश्यक हो जाता है जब कोई शत्रु हमारी सीमाओं को तोड़कर हमारी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को चुनौती देता है या हमारे पौरुष और शौर्य की परीक्षा लेने के लिए हमारे समक्ष खड़ा होकर हमें ललकारता है।

यान या युद्ध घोषित किए बिना आक्रमण की तैयारी

शत्रु को अपने प्रति सदा संशय में डाले रखना चाहिए। उसे हमारे राष्ट्र की किसी भी दुर्बलता का ज्ञान नहीं होना चाहिए। मनोवैज्ञानिक दबाव उस पर बना रहना चाहिए। यदि उसके समक्ष हमने अपनी दुर्बलताओं को दिखाने का तनिक सा भी प्रयास किया तो परिणाम वही होगा जो 1962 में चीन ने हमारे साथ किया था। उस समय भारत के प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने चीन की शत्रुतापूर्ण साम्राज्यवादी और विस्तार वादी नीतियों के प्रति असावधानी बरतकर उसे अपनी अहिंसात्मक रक्षा नीति की दुर्बलता बता दी थी। जिसका परिणाम यह हुआ कि चीन ने भारत पर हमला किया और उस समय हमें अपने राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा बरती गई असावधानी का भारी मूल्य चुकाना पड़ा।

संश्रय अर्थात् आत्मरक्षा की दृष्टि से राजा द्वारा अन्य राजा की शरण में जाना

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि शत्रु देश हम पर अचानक हमला कर देता है। तब उससे युद्ध के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय हमारे पास उपलब्ध नहीं होता। ऐसी स्थिति में एक ही विकल्प रह जाता है कि उस देश के अतिरिक्त जो देश हमारे मित्र हैं या आक्रमण करने वाले देश के शत्रु हैं, हमें उनसे सामरिक संधि करनी चाहिए और उनका साथ लेकर ऐसे आक्रमणकारी शत्रु का सामना करना चाहिए। अपनी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को बचाए और बनाए रखने के लिए ऐसा किया जाना नैतिक रूप से उचित माना जाता है। जैसा कि हम वर्तमान समय में देख रहे हैं, जब चीन अपने सैनिकों को हमारी सीमा पर भेज रहा है और सीमा पर युद्ध की सम्भावना प्रबल होती जा रही हैं। ऐसे में भारत की विदेश नीति चाणक्य के इसी सूत्र का लाभ उठाते हुए संसार में अपने मित्रों को खोज रही है। इस समय हम यह भी देख रहे हैं कि भारत के साथ बड़ी संख्या में वैश्विक शक्तियां एकत्र होती जा रही हैं।

इसे चाणक्य नीति की सफलता ही मानना चाहिए कि जितनी बड़ी संख्या में वैश्विक शक्तियां भारत का सामरिक सहयोग करने की तैयारी कर रही हैं, उतने ही अनुपात में चीन हमारी ओर बढ़ने में भय अनुभव कर रहा है। पिछले दिनों चीन के द्वारा कुछ सैनिक भारत की सीमाओं पर तैनाती के लिए जब गाड़ियों में लादकर भेजे गए तो गाड़ियों में बैठे हुए चीनी सैनिक भारत के भय के कारण रो रहे थे। क्योंकि उन्हें यह आभास हो रहा था कि आज का भारत 1962 का भारत नहीं है , आज के भारत के साथ वैश्विक शक्तियां जुड़ती जा रही हैं और यदि इस बार

युद्ध हुआ तो चीन को युद्ध का भारी मूल्य चुकाना पड़ सकता है। यही कारण है कि चीन के सैनिकों को ऐसा आभास हो रहा है कि हम संभवतरू इस युद्ध में मारे जाएंगे।

द्वैधीभाव अर्थात् एक राजा से शान्ति की संधि करके अन्य के साथ युद्ध करने की नीति

इस नीति को हम भारत रूस संबंधों के माध्यम से समझ सकते हैं । भारत के प्रति रूस का मित्रता पूर्ण दृष्टिकोण सारा संसार जानता है। भारत रूस की सामरिक संधि के चलते भारत को कभी भी रूप से किसी प्रकार का खतरा नहीं रहा है। रूस ने अपनी मित्रता को न केवल भारत रूस के द्वीपक्षीय सम्बन्धों के विषय में निभाया है, बल्कि उसने संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंचों पर भी भारत का साथ देकर अपनी सच्ची मित्रता का प्रमाण प्रस्तुत किया है। भारत ने रूस से सामरिक संधि करके भारत ने चीन को यह संदेश दिया है कि वह अपनी क्षेत्रीय अखण्डता को बनाए रखने के लिए उस से युद्ध करने को तैयार है। भारत रूस की मित्रता और सामरिक संधि को समझकर चीन भी भारत पर हमला करने से पहले 10 बार सोचेगा। भारत इस समय चीन से युद्ध करने के लिए तैयार है, क्योंकि वह जानता है कि चीन इस समय अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपने आपको अकेला अनुभव कर रहा है।

भारत चाणक्य नीति के इसी सूत्र को अपनाकर वैश्विक शक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर चीन से 1962 का बदला लेने के लिए तैयार है । यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय शान्ति को बनाए रखने के अपने महान दायित्व का निर्वाह करने के दृष्टिगत भारत अभी भी इसी प्रतीक्षा में है कि चीन ही युद्ध का आरम्भ करे तो अच्छा रहेगा।

दुर्बल देशों के राजनीतिज्ञों को चाहिए कि वे अपने पड़ोसी सबल देश से किसी भी प्रकार मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बनाए रखें। यदि छोटे देश या छोटे राजा अपने पड़ोसी सबल राष्ट्र को तोड़ने की या उसे किसी भी प्रकार से आहत करने की चेष्टा में सम्मिलित होंगे या ऐसे शड़यंत्र को हवा देंगे तो निश्चय ही उनका अपना अस्तित्व मिट जाएगा। वर्तमान सन्दर्भ में हम नेपाल को देख सकते हैं। नेपाल हमारा बहुत पुराना पड़ोसी देश है, परन्तु वर्तमान में वह चीन के हाथों खेल रहा है। अब चीन जैसे पड़ोसी और साम्राज्यवादी देश के हाथों में खेलकर वह अपनी स्वयं की ही हानि कर रहा है।

हमारी एकता और अखण्डता को छिन्न–भिन्न करने की योजना में सम्मिलित है तो ऐसे उत्पाती पड़ोसी शत्रु देश पर हमला करके उसे दण्डित करना सबल राष्ट्र का कार्य है। ऐसे पड़ोसी शत्रु देश के प्रति सबल राष्ट्र को भेद के माध्यम से भी उचित मार्ग पर लाने का अधिकार है। इसका अभिप्राय है कि यदि आज महामति चाणक्य होते तो वे पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देश को युद्ध के माध्यम से दंडित करने की नीति अपनाते। क्योंकि पाकिस्तान भारत की एकता और अखण्डता के लिए पहले दिन से एक खतरा बना हुआ है। वह नित्य प्रति ऐसे शड़यंत्र में लगा रहता है जिससे भारत की एकता और अखण्डता नष्ट हो जाए। इसके उपरान्त भी भारत का नेतृत्व पाकिस्तान को 'छोटा भाई' कहकर क्षमा करने की आत्मघाती नीति का पालन करता रहा है। चाणक्य के रहते ऐसी नीति को प्राथमिकता न देकर शत्रु पाकिस्तान को दण्ड और भेद के माध्यम से सही मार्ग पर लाने का प्रबंध किया जाता।

विदेश नीति को सफल बनाने के लिए गुप्तचर व्यवस्था का शक्तिशाली होना भी बहुत आवश्यक है। इस संबंध में कौटिल्य का विचार है कि कौटिल्य ने गुप्तचरों के प्रकारों व कार्यों का विस्तार से वर्णन किया है। गुप्तचर विद्यार्थी गृहपति, तपस्वी, व्यापारी तथा विष–कन्याओं के रूप में हो सकते थे। राजदूत भी गुप्तचर की भूमिका निभाते थे। इनका कार्य देश–विदेश की गुप्त सूचनाएँ राजा तक पहुँचाना होता था। ये जनमत की स्थिति का आंकलन करने, विद्रोहियों पर नियंत्रण रखने तथा शत्रु राज्य को नष्ट करने में योगदान देते थे। कौटिल्य ने गुप्तचरों को राजा द्वारा धन व मान देकर सन्तुष्ट रखने का सुझाव दिया है।

योगक्षेमः भारतीय विदेश नीति का लक्ष्य

कौटिल्य के मुताबिक़ विदेश नीति का मापदंड ये है कि, क्या उससे किसी राज्यसत्ता को गर्त में जाने, यथास्थिति और विकास के रास्ते पर आगे बढ़ने से जुड़े चक्र में ऊपर उठने में मदद मिलती है. विदेश नीति का लक्ष्य भौगोलिक सीमाओं की सुरक्षा के साथ–साथ आर्थिक समृद्धि प्रदान करना भी है. ये दोनों एक दूसरे को बल प्रदान करते हैं. लिहाज़ा भारतीय विदेश नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में पाकिस्तान और चीन की संभावित भूमिका के हिसाब से ही उनके प्रति भारत का रवैया परिभाषित होना चाहिए.

इससे भारत के राष्ट्रीय हितों में स्पष्टता लाने में आसानी होगी. इसके साथ ही वैश्विक स्वभाव वाली और आपस में जुड़ी विश्व व्यवस्था में भारतीय विदेश नीति के घोषित लक्ष्य योगक्षेम (सुरक्षा और कल्याण) को परिभाषित करने में भी मदद मिलेगी. शांगरी–ला डायलॉग में अपने मुख्य संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की भावी आर्थिक संभावनाओं को न सिर्फ़ देश की अर्थव्यस्था के आकार बल्कि वैश्विक मसलों में भारत के जुड़ाव की गहराई से भी जोड़ा, किसी ख़ास इलाक़े में स्थित राज्य–सत्ताओं का भविष्य आपस में जुड़ा होता है. ऐसे में इनके लिए आपसी टकराव की जगह सहयोग का संबंध बनाना ज़्यादा समझदारी भरा होता है. आधुनिक समय में मंडला की राजसत्ताएं "आपस में जुड़ाव वाले हो गए हैं. ऐसे में वो किसी एक राजनीतिक इकाई में राजकीय कर्तव्यों को दूसरी राजसत्ता के लोगों की खुशियों के साथ जोड़ देते हैं." भारत नियम–आधारित विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने का पक्षधर है, ऐसी कल्पनाशीलता सुरक्षा और समृद्धि के दोहरे मकसद को लक्ष्य बनाती है।

भारत की सामरिक और रणनीतिक गणनाओं को इसी संदर्भ में देखे जाने की ज़रूरत है. चीन एक स्थापित क्षेत्रीय महाशक्ति है, विश्व की आर्थिक व्यवस्था में उसका दर्जा काफ़ी ऊंचा है. भारतीय रणनीतियों में उसकी अहमियत अस्थिरता भरे पाकिस्तान के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा है. वैश्विक मंच पर भारत अपने लिए महाशक्ति वाली भूमिका तलाश रहा है. ऐसे में कम से कम थोड़े समय के लिए ही सही, मगर चीन का रोल भारत के लिए बेहद अहम है. हालांकि, भारत की आर्थिक समृद्धि के लिए एक स्थिर और शांत पड़ोस बेहद ज़रूरी है, ऐसे में पाकिस्तान के साथ रिश्तों पर भी ध्यान दिए जाने की ज़रूरत है, भारत के नज़रिए से देखें तो एक निष्क्रिय पाकिस्तान ही पर्याप्त है जबकि चीन के साथ सकारात्मक और उत्पादकता से भरा संबंध वक्त की मांग और बेहद ज़रूरी है, चीन दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, ऐसे में वो एक

ऐसा किरदार है जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता, जबकि इस पायदान में पाकिस्तान का स्थान 44वां है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कौटिल्य और भारत की विदेश नीति के अध्ययन के लिए
2. आचार्य चाणक्य की छः सूत्रीय विदेश नीति और मोदी सरकार के अध्ययन के लिए

अनुसंधान क्रियाविधि

द्वितीयक स्रोत

माध्यमिक डेटा कई संसाधनों से एकत्र किया जाता है जैसे विभिन्न पुस्तकालयों, पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट, पत्रिका, और समाचार पत्रों में साहित्यिक कॉलम, आधिकारिक वेबसाइट

निष्कर्ष

मोदी के उदय ने भारत के अधिक आत्मविश्वास को दर्शाया है। विदेश सचिव एस जयशंकर ने जोर देकर कहा, इसकी विदेश नीति का आयाम केवल एक संतुलन शक्ति के बजाय एक प्रमुख शक्ति बनने की आकांक्षा है।यह विजिगिशु (जो जीत की इच्छा रखता है) होने के करीब है, जैसा कि अर्थशास्त्र में चित्रित किया गया है। एक प्रमुख शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा कौटिल्य की अवधारणा के चक्रवर्ती (आदर्श, सार्वभौमिक नेता) होने के आवेग को दर्शाती है।

ऐसा लगता है कि मोदी और उनके सलाहकारों ने अर्थशास्त्र के मूल संदेश को आत्मसात कर लिया हैरू शासक को शक्ति का ज्ञानपूर्वक उपयोग करना चाहिए क्योंकि ज्ञान शक्ति और धन से अधिक मूल्यवान है।

सन्दर्भ

1. शिवशंकर मेनन 2010 से 2014 तक राश्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और 2006 से 2009 तक विदेश सचिव रहे।
2. किसिंजर, हेनरी, वर्ल्ड ऑर्डररू रिफ्लेक्शंस ऑन द कैरेक्टर ऑफ नेशंस एंड द कोर्स ऑफ हिस्ट्री (न्यूयॉर्क, पेंगुइन प्रेसरू 2014), पी। 195 रूयूरोपीय विचारकों ने शक्ति संतुलन के सिद्धांत में जमीन पर अपने तथ्यों का अनुवाद करने से पहले, अर्थशास्त्र ने एक समान, यदि अधिक विस्तृत प्रणाली को श्राज्यों का चक्रश कहा जाता है, स्थापित किया।
3. कौटिल्य का अर्थशास्त्र, आईडीएसए में पता, 8 अक्टूबर 2013।
4. एक पूर्ण स्पष्टीकरण के लिए, कृपया देखेंरू मिश्रा, मलय, श्कौटिल्य का अर्थशास्त्ररू अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में अपनी सही जगह को बहाल करना, रक्षा अध्ययन जर्नल (अप्रैल–जून 2016, खंड 10, संख्या 2), पीपी.77–109.
5. जैसा कि कर्नल (सेवानिवृत्त) पी.के. 19 अप्रैल 2012 को आईडीएसए में आयोजित कार्यक्रम की रिपोर्ट में गौतम, <http:@@idsa-in@event@KautilyasArthashastraandIndiasStrategicCulture>

6. इंडिया एंड द वर्ल्ड, पर नानी पालकीवाला मेमोरियल लेक्चर, चेन्नई, 18 अक्टूबर 2013 (यानी, पिछले चुनाव से पहले।)
7. इक्कीसवां आईआईएसएस फुलर्टन व्याख्यान, सिंगापुर, 20 जुलाई 2015।
8. आचार्य अमिताव। 'डायलॉग एंड डिस्कवरीरू इन सर्च ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस थ्योरीज बियॉन्ड द वेस्ट'। मिलेनियमरू जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज 39, नं। 3 (2011)रू 619–637।
9. आचार्य, अमिताव और बैरी बुजान। गैर–पश्चिमी अंतर्राश्ट्रीय संबंध सिद्धांतरू एशिया पर और उससे परे परिप्रेक्ष्य। लंदनरू रूटलेज, 2009।
10. एल्पर्स, एडवर्ड। विश्व इतिहास में हिंद महासागर। ऑक्सफोर्डरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2014।